म-दनी मुज़ाकरा (क़िस्त - 4)

(HINDI)

शैख़े त़रीक़त अमीरे अह्ले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी

हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी

के जवाबात

बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने में हिक्मत

(मअ़ दीगर दिल चस्प सुवाल जवाब)

Buland Aawaz se Zikr karne me Hiqmat (Hindi)

- आ'ला हज़रत से अ़क़ीदत स.3 • परेशानी दूर करने के अवरादो वज़ाइफ़ स.13
- तमाम सहाबाए किराम जन्नती हैं • स.23 पेशावर भिकारियों का हुक्म स.35
- होटल से बिला इजाज़त पानी पीना या हाथ धोना कैसा स.39

पेशकश : मजलिसे म-दनी मुज़ाकरा (दा'वते इस्लामी)

मिल्लत नगर, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया

Ph:91-79-25391168 E-mail : maktabahind@gmail.com www.dawateislami.net

मक-त-बतुल मदीना

किताब पढ़ने की दुआ

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ! (अल मुस्त़त़रफ़, जि. 1, स. 40, दारुल फ़िक्र बैरूत)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम **1428** हि.

पहले इसे पढ़ लीजिये !

اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के बानी, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने मख़्सूस अन्दाज़ में सुन्नतों भरे बयानात और इल्मो हिक्मत से मा'मूर **म-दनी मुज़ा-करात** के ज़रीए कुछ ही अ़र्से में लाखों मुसल्मानों के दिलों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया है, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सोह़बत से फ़ाएदा उठाते हुए कसीर इस्लामी भाई वक़्तन फ़ वक़्तन मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर होने वाले **म-दनी मुज़ा-करात** में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के म-सलन अ़क़ाइद व आ'माल, फ़ज़ाइल व मनाक़िब, शरीअ़त व त़रीक़त, तारीख़ व सीरत, साइन्स व त़िब, अख़्लाक़ियात व इस्लामी मा'लूमात और दीगर बहुत से मौज़ूआ़त के मु-तअ़ल्लिक़ सुवालात करते हैं और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उन्हें हिक्मत आमोज़ व इ़श्क़े रसूल

में डूबे हुए जवाबात से नवाज़ते हैं। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इन अ़ता कर्दा दिल चस्प और इ़ल्मो हि़क्मत से लबरेज़ इर्शादात के म-दनी फूलों की खुश्बूओं से दुन्या भर के मुसल्मानों को महकाने के मुक़द्दस जज़्बे के तह़त दा'वते इस्लामी की **मजलिसे म-दनी मुज़ा-करा** इन म-दनी मुज़ा-करात को तह़रीरी गुलदस्तों की सूरत में पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रही है। इस **म-दनी मुज़ा-करा** के तह़रीरी गुलदस्ते का मुत़ा-लआ़ करने से اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ अ़क़ाइद व आ'माल और ज़ाहिर व बात़िन की इस्लाह़, मह़ब्बते इलाही عَزَّوَجَلَّ व इ़श्क़े रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ला ज़वाल दौलत के साथ साथ मज़ीद ह़ुसूले इ़ल्मे दीन का जज़्बा भी बेदार होगा। اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ

(**मजलिसे म-दनी मुज़ा-करा**) यकुम शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म सि. 1429 हि./ 4 अगस्त सि. 2008 ई.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ، وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِالْمُرْسَلِيْنَ ، اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ،

बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने में हिक्मत

(मअ़ दीगर दिल चस्प सुवाल जवाब)

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (40 स-फ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **मा'लूमात का अनमोल ख़ज़ाना हाथ आएगा ।**

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : ''जिस ने कहा **جَزَى اللّٰهُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَّاهُوَ اَهْلُهٗ:** ''[1] 70 हज़ार फिरिश्ते हज़ार दिन तक उस के लिये नेकिया लिखते रहेंगे ।

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से अ़क़ीदत

सुवाल : आप को आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से कब अ़क़ीदत पैदा हुई ?

जवाब : बचपन में आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना'तों के मक़्त़अ[1] में रज़ा सुन कर मैं समझता था कि येह कोई शाइ़र होंगे । एक बार हमारे

---

1. अल्लाह तआ़ला हमारी त़रफ़ से हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ऐसी जज़ा अ़त़ा फ़रमाए जिस के वोह अहल हैं ।)

2 कलाम के जिस आख़िरी शे'र में शाइ़र अपना तख़ल्लुस लिखता है उस शे'र को मक़्त़अ़ कहते हैं ।)

महल्ले की बादामी मस्जिद के अन्दर मर्हूम ज़-करिय्या जो कि गोंडल (हिन्द) के मैमन थे और ग़ालिबन इसी मस्जिद के मु-तवल्ली भी थे, उन्हों ने रज़ा के साथ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه कहा तो मुझे तअज्जुब हुवा, क्यूं कि ज़ेह्न बना हुवा था कि औलियाए किराम के नाम के साथ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه कहा जाता है लिहाज़ा मैं ने भोलपन के साथ मर्हूम हाजी ज़-करिय्या साहिब से सुवाल किया कि क्या "रज़ा" कोई वलिय्युल्लाह थे ? तो उन्हों ने मुझे आ'ला हज़रत इमाम **अहमद रज़ा ख़ान** عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن का बसद अक़ीदत तआरुफ़ करवाया । उन का अक़ीदत मन्दाना अन्दाज़े तफ़्हीम दिल में घर कर गया और मैं **आ'ला हज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का मो'तक़िद बन गया । फिर जब कुछ बड़ा हुवा और आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के बारे में मज़ीद मा'लूमात हासिल हुई और इन की तसानीफ़ व फ़तावा का मुता-लआ किया तो बस इन्हीं का हो कर रह गया और येह ठान ली कि मुरीद भी बनूंगा तो सिर्फ़ इन्हीं के सिल्सिले में बनूंगा । लिहाज़ा ख़ुश क़िस्मती से आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के मुरीद और ख़लीफ़ए मजाज़ सय्यिदी क़ुत्बे मदीना हज़रत शैख़ुल फ़ज़ीलत मौलाना ज़ियाउद्दीन अहमद म-दनी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی की बैअत से

मुशर्रफ़ हो गया। बस इस के सिवा और क्या कहूं कि अगर मेरे पास ''कुछ'' है भी तो वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से ब तुफ़ैले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़ैज़ाने रज़ा है।

कैसे आक़ाओं का हूं बन्दा रज़ा
बोल बाले मेरी सरकारों के

दरख़्त के नीचे कलिमा शरीफ़ पढने में हिक्मत

सुवाल : एक मर्तबा आप को देखा गया कि आप ने दरख़्त के नीचे बुलन्द आवाज़ से कलिमए पाक पढ़ा, इस में क्या हिक्मत थी ?

जवाब : اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ने उस दरख़्त को बुलन्द आवाज़ से कलिमए त़य्यिाा सुना कर अपने ईमान पर गवाह बनाया है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र की आवाज़ जहां तक जाती है हर ख़ुश्को तर शै उस के लिये गवाह बन जाती है।

बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने की फ़ज़ीलत

साहिबे तफ़्सीरे रूहुल बयान अ़ल्लामा इस्माईल ह़क़्क़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی पारह 4 सूरए आले इमरान की आयत 191 : رَبَّنَا مَاخَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا के तह़्त फ़रमाते हैं : ''बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करना जाइज़ बल्कि मुस्तह़ब है जब कि रिया न हो, ताकि दीन का इज़्हार हो, ज़िक्र की ब-र-कत घरों में सामिईन तक पहुंचे और

जो कोई इस की आवाज़ को सुने ज़िक्र में मश्ग़ूल हो जाए और क़ियामत के दिन हर ख़ुश्को तर ज़िक्र करने वाले के ईमान की गवाही दे।" (तफ़्सीरे रूहुल बयान, जि. 2, स. 147, कोएटा) ज़िक्रे बिल जह्र या'नी बुलन्द आवाज़ से करने में येह एह़तियात़ ज़रूरी है कि किसी नमाज़ी, ताली (या'नी तिलावत करने वाले), मरीज़ या सोते को ईज़ा न हो।

अज़ान की आवाज़ की गवाही

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : जहां तक मुअज़्ज़िन की आवाज़ पहुंचती है वहां तक जो भी जिन्न और इन्सान या कोई भी चीज़ (या'नी जमादात, नबातात, ह़ैवानात वग़ैरहा) अज़ान की आवाज़ सुनेगी वोह क़ियामत के दिन मुअज़्ज़िन के लिये गवाही देगी। (सह़ीहुल बुख़ारी, जि. 1, स. 222, ह़दीस : 609, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत)

हर चीज़ तस्बीह़ करती है

अ़ल्लामा नूरुद्दीन अ़ली बिन सुल्त़ान अल क़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِیْ इसी ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : सह़ीह़ येही है कि जमादात (या'नी धात, पत्थर, पहाड़ वग़ैरा), नबातात (या'नी दरख़्त,

पौदे, सब्ज़ियां वग़ैरा) हैवानात इल्मो इदराक (समझ) और तस्बीह़ करने की सलाहिय्यत रखते हैं जैसा कि अल्लाहु रह़मान عَزَّوَجَلَّ के फ़रमान : (وَاِنْ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ (पारह : 1, अल ब-क़रह : 74) तर-जमए कन्ज़ुल ईमान : और कुछ वोह हैं जो अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं) और وَاِنْ مِّنْ شَیْءٍ اِلَّا یُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ ((पारह : 15, अल अस्राअ : 44) तर-जमए कन्ज़ुल ईमान : और कोई चीज़ नहीं जो उसे सराहती हुई उस की पाकी न बोले) नीज ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का फ़रमान कि एक पहाड़ दूसरे से कहता है : ''क्या तुझ पर किसी ऐसे शख़्स का गुज़र हुवा जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र किया हो ? पस जब वोह हां में जवाब देता है तो दूसरा ख़ुश हो जाता है।'' (शु-अ़बुल ईमान लिल बैहक़ी, जि. 1, स. 402, ह़दीस : 538, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या बैरूत) (मज़्कूरा बाला आयात व रिवायत) से मा'लूम हुवा और इमाम बग़वी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने फ़रमाया : مَذْهَبُ اَهْلِ السُّنَّةِ या'नी अहले सुन्नत का येही मज़्हब है। (मिरक़ातुल मफ़ातीह़, जि. 2, स. 348, दारुल फ़िक्र बैरूत)

ज़मीन के ह़िस्सों की आपस में गुफ़्तुगू

त़-बरानी शरीफ़ में ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है : ''कोई सुब्ह़ो शाम ऐसी नहीं मगर येह कि ज़मीन का एक टुकड़ा दूसरे को पुकार क कहता है :

ऐ पडोसी ! क्या तुझ पर आज किसी ऐसे मर्दे सालेह़ का गुज़र हुवा जिस ने तुझ पर नमाज़ पढ़ी हो या अल्लाहु रह़मान عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र किया हो पस अगर वोह हां कह दे तो येह (पुकारने वाला) ख़याल करता है कि इस के सबब उसे इस पर फ़ज़ीलत ह़ासिल हो गई है ।'' (अल मो'जमुल औसत़ लित़्-बरानी, जि. 1, स. 171, ह़दीस : 562, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत)

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में ज़िक्रो दुरूद बुलन्द आवाज़ से करने का सिल्सिला होता है और इस के इ़लावा तिलावते क़ुरआने मजीद, ना'त शरीफ़, बयान, दुआ़, सलातो सलाम, सुन्नतें, आदाब और दुआ़एं सीखने सिखाने के ह़ल्क़ों की भी तरकीब होती है । اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के इन इज्तिमाआ़त की ब-र-कत से बे शुमार लोग गुनाहों भरी ज़िन्दगी और बुरे माह़ोल से ताइब हो कर सौम व सलात और सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों के पाबन्द बन चुके हैं । आप भी अपने क़ुलूब व अज़्हान को ज़िक्रो दुरूद की लज़्ज़तों से आशना करने, अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की सच्ची मह़ब्बत, सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इ़श्क़ से सरशार करने और क़ब्रो आख़िरत संवारने के लिये दा'वते इस्लामी के इन

सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में ज़रूर ज़रूर शिर्कत फ़रमाया कीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दो जहां की बेशुमार भलाइयां नसीब होंगी। आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक ''म-दनी बहार'' गोश गुज़ार करता हूं।

डब्बो स्नोकर का आ़दी सौम व सलात का पाबन्द बन गया

लियाक़त आबाद (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : मैं बे तह़ाशा फ़िल्में डिरामे देखा करता, डब्बो स्नोकर खेलने का जुनून की ह़द तक शौक़ था ह़त्ता कि किसी के डांटने बल्कि मारने तक से भी येह लत नहीं छूट सकती थी। गुनाहों की नुहूसत का आ़लम येह था कि مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ नमाज़ पढ़ने से दिल घबराता था! अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से हमारे अ़लाक़े की फ़ुरक़ानिया मस्जिद (लियाक़त आबाद, बाबुल मदीना कराची) में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी की त़रफ़ से होने वाले आख़िरी अ़शरए र-मज़ानुल मुबारक (सि. 1425 हि., 2004 ई.) के इज्तिमाई ए'तिकाफ़ के अन्दर मैं गुनहगार भी आ़शिक़ाने रसूल के साथ मो'तकिफ़ हो गया। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ''म-दनी इन्आ़मात'' की ब-र-कत से आख़िरत बनाने की सोच बनी, गुनाहों से कुछ बे

रग़बती पैदा हुई। फिर क़ादिरिय्या र-ज़विय्या सिल्सिले में मुरीद बना तो नमाज़ की पाबन्दी नसीब हुई, मैं ने डब्बो स्नोकर खेलना तर्क कर दिया। मुझे हैरत है मैं ने येह कैसे छोड़ दिया ! इस के बा'द दा'वते इस्लामी के **(बैनल अक़्वामी)** तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ के आख़िरी दिन सहराए मदीना (बाबुल मदीना) में हाज़िरी हुई, वहां **''T.V. की तबाह कारियां''** के मौज़ूअ़ पर बयान हुवा। उस को सुन कर मैं अ़ज़ाबे क़ब्रो हश्र के ख़ौफ़ से लरज़ उठा और मैं ने अ़हद कर लिया कि कभी भी **T.V.** नहीं देखूंगा। मैं ने अपनी प्यारी अम्मी जान को सुन्नतों भरे बयान **''T.V की तबाह कारियां''** की केसेट सुनाई तो उन्हों ने भी **T.V** देखना बिल्कुल बन्द कर दिया और सरकारे ग़ौसुल आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की मुरीदनी बनने का जज़्बा पैदा हुवा चुनान्चे इन को भी बैअ़त करवा दी। इस की ब-र-कत से अम्मी जान फ़र्ज़ नमाज़ों के साथ साथ तहज्जुद, इशराक़ और चाश्त भी पाबन्दी से पढ़ने लगीं। ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ की अ़-ज़-मतो शान पर मेरी जान क़ुरबान ! थोड़े ही अ़र्से में अम्मी जान को मदीनए मुनव्वरह زَادَهَااللّٰهُ شَرَفًاوَّتَكْرِيمًا का बुलावा आ गया। इस पर अम्मी जान ने ख़ुद फ़रमाया कि येह सब बैअ़त होने का फ़ैज़ है। येह बयान देते वक़्त اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं अपने यहां जैली क़ाफ़िला ज़िम्मादार की

हैसिय्यत से अपनी प्यारी प्यारी म–दनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी की ख़िदमत करने की कोशिश कर रहा हूं । (फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल, स. 1504, मक–त–बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची)

सीखने ज़िन्दगी का क़रीना चलो, म–दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
देखना है जो मीठा मदीना चलो, म–दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

परेशानी दूर करने के अवराद व वज़ाइफ़

सुवाल : परेशानी दूर होने का कोई विर्द बता दीजिये ।

जवाब : (1) लाह़ौल शरीफ़ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰہِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْم की कसरत कीजिये इस से 99 बलाएं दूर होती हैं, इन में सब से आसान तर बला परेशानी है और लाह़ौल शरीफ़ रोज़ाना 60 बार पढ़ कर पानी पर दम कर के पानी पी लिया करें । (अल मल्फ़ूज़ ह़िस्सा अव्वल, स. 163, मक–त–बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची)

(2) हर नमाज़ के बा'द पेशानी पर हाथ रख कर येह दुआ पढ़ लिया करें :

بِسْمِ اللّٰہِ الَّذِیْ لَا اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمِ، اَللّٰھُمَّ اَذْھِبْ عَنِّی الْھَمَّ وَالْحُزْنَ

اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हर परेशानी और ग़म व मलाल से अमान पाएंगे ।

(अल वज़ी–फ़तुल करीमा, स. 21, इदारा तह़क़ीक़ाते इमाम अह़मद रज़ा, बाबुल मदीना कराची)

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि इमामुल आ़बिदीन, सुल्त़ानुस्साजिदीन, सय्यिदुस्सालिह़ीन, सय्यिदुल मुर्सलीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब नमाज़ अदा फ़रमा लेते तो मुबारक **पेशानी पर अपना सीधा हाथ रखते और येह दुआ़ पढ़ते :** [1]

(ऐज़न, स. 251, ह़दीस : 3178))

بِسْمِ اللّٰہِ الَّذِیْ لَا اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمِ اَللّٰھُمَّ اَذْھِبْ عَنِّی الْغَمَّ وَالْحُزْنَ

तरजमा : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह रह़मान व रह़ीम है ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! दूर फ़रमा मुझ से ग़म व मलाल।

(अल मो'जमुल औसत़ लित़्त़-बरानी, जि. 2, स. 57, ह़दीस : 2499, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत)

मेरे आक़ाए ने'मत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن ने इस दुआ़ पर मज़ीद इन अल्फ़ाज़ का इज़ाफ़ा फ़रमाया है : ''وَعَنْ اَھْلِ السُّنَّۃِ'' (या'नी और अहले सुन्नत से भी ग़म व मलाल दूर फ़रमा) (अल वज़ी-फ़तुल करीमा, स. 21, इदारा तह़क़ीक़ाते इमाम अह़मद रज़ा, बाबुल मदीना कराची)

---

1 त़-बरानी शरीफ़ ही की एक दूसरी रिवायत में ''اَلْغَمَّ'' की जगह '' اَلْھَمَّ '' के अल्फ़ाज़ भी मन्क़ूल हैं।

तमाम मुसल्मानों को दुआ में शरीक करने की फ़ज़ीलत

दुआ के आदाब में से एक अदब येह भी है कि अपने लिये दुआ करने के साथ दूसरे मुसल्मानों को भी शामिल कर ले जैसा कि रईसुल मु-तकल्लिमीन ह़ज़रते मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان अपनी किताब ''अह्सनुल विआ़अ लि आदाबिद्दुआ़'' में दुआ़ का एक अदब येह भी बयान फ़रमाते हैं कि जब अपने लिये दुआ़ मांगे तो सब अहले इस्लाम को इस में शरीक कर ले ।

मेरे आक़ा, आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इसी के तह़ूत दूसरों को दुआ़ए ख़ैर में शामिल करने की वजह बयान फ़रमाते हैं कि ''अगर ख़ुद येह क़ाबिले अ़त़ा नहीं, किसी बन्दे का तुफ़ैली हो कर मुराद को पहुंच जाएगा ।'' फिर चन्द अह़ादीसे मुबा-रका नक़्ल फ़रमाते हैं :

''या नबी'' के 5 ह़ुरूफ़ की निस्बत से 5 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मदीना 1 : जो शख़्स मुसल्मान मर्दों और औ़रतों के लिये दुआ़ए ख़ैर करता है, क़ियामत को इन की मजलिसों पर गुज़रेगा, एक कहने

वाला कहेगा : येह वोह है कि तुम्हारे लिये दुन्या में दुआए ख़ैर करता था। पस वोह उस की शफ़ाअ़त करेंगे और जनाबे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ कर के बहिश्त (जन्नत) में ले जाएंगे। (अह्सनुल विआ़अ लि आदाबिद्दुआ़, स. 26, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची)

मदीना 2 : अल्लाह तआ़ला उस शख़्स के लिये हर मुसल्मान मर्द व औ़रत के बदले एक एक नेकी लिखेगा।

(अल जामिइ़स्सग़ीर, स. 513, ह़दीस : 8419, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत)

मदीना 3 : हर रोज़ मुसल्मान मर्दों और मुसल्मान औ़रतों के लिये 27 बार इस्तिग़्फ़ार करने वाले की दुआ मक़्बूल होती है और इन की ब-र-कत से ख़ल्क़ (मख़्लूक़) को रोज़ी मिलती है।

(अल जामिइ़स्सग़ीर, स. 513, ह़दीस : 8420, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत)

मदीना 4 : अल्लाह तआ़ला को कोई दुआ इस से ज़ियादा महबूब नहीं कि आदमी अ़र्ज़ करे **''اَللّٰھُمَّ ارْحَمْ اُمَّةَ مُحَمَّدٍ رَّحْمَةً عَامَّةً''** तरजमा : या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! उम्मते मुहम्मदिय्यह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर आ़म रह़मत फ़रमा। (या'नी दुन्या में भी और आख़िरत में भी)।

(कन्ज़ुल उ़म्माल, जि. 2, स. 35, ह़दीस : 3209, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत)

मदीना 5 : बनी आदम के जितने बच्चे पैदा होंगे, सब उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करें, यहां तक कि वफ़ात पाएं। (अह्सनुल विआ़अ लि आदाबिद्दुआ़, स. 28, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची)

मुसाफ़िर की दुआ क़बूल होती है

اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों में राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सफ़र करने की ब-र-कत से जहां पन्ज वक़्ता नमाज़ व नवाफ़िल की पाबन्दी नसीब होती है, प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतें भी सीखने को मिलती हैं और इल्मे दीन के लिये सफ़र का सवाब ह़ासिल होता है, इन फ़वाइद व स-मरात के साथ साथ اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ बे शुमार दीनी व दुन्यवी परेशानियों से भी नजात मिलती है कि मुसाफ़िर की दुआ़ मक़्बूल व मुस्तजाब है, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है की हुजूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : ''तीन दुआ़एं ऐसी हैं कि जिन की क़बूलिय्यत में कोई शक नहीं : **(1)** मज़्लूम की दुआ़ **(2)** मुसाफ़िर की दुआ़ **(3)** औलाद के ह़क़ में बाप की दुआ़ ।'' (सु-ननो तिरमिज़ी, जि. 3, स. 362, ह़दीस : 1912, दारुल फ़िक्र बैरूत)

नई ज़िन्दगी मिल गई

एक मज़दूर के गुर्दे फ़ेल हो गए । अ़ज़ीज़ों ने अस्पताल में दाख़िल करवा दिया । उस का औबाश भान्जा इ़यादत के लिये

आया। मामूं जान ज़िन्दगी की आख़िरी घड़ियां गिन रहे थे। उस का दिल भर आया और आंखों से आंसू छलक पड़े। उस ने सुन रखा था कि दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के दौरान दुआ क़बूल होती है। चुनान्चे वोह म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र पर चल दिया और ख़ूब गिड़गिड़ा कर मामूं जान की सिह़्ह़त याबी के लिये दुआ की। जब वापस पलटा तो मामूं जान सिह़्ह़त याब हो कर घर भी आ चुके थे और अब नमाज़ के लिये घर से निकल कर ख़िरामां ख़िरामां जानिबे मस्जिद रवां दवां थे। येह रह़मत भरा मन्ज़र देख कर उस नौ जवान ने गुनाहों भरी ज़िन्दगी से तौबा की और अपने आपको दा'वते इस्लामी के म-दनी रंग में रंग लिया। (फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल, स. 82, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची)

मर्ज़ गम्भीर हो, गर्चे दिलगीर हो होंगी हल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो
ग़म के बादल छटें और ख़ुशियां मिलें दिल की कलियां खिलें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पीरो मुर्शिद के लिये दुआए मग़्फ़िरत कर सकते हैं

सुवाल : अपने पीरो मुर्शिद के दुआए मग़्फ़िरत कर सकते हैं या नहीं ?

जवाब : कर सकते है। اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं अपने पीरो मुर्शिद सय्यिदी क़ुत्बे मदीना मौलाना ज़ियाउद्दीन अह़मद म-दनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى के लिये दुआए मग़्फ़िरत करता हूं। मुर्शिद तो मुर्शिद, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के लिये भी दुआए मग़्फ़िरत करना जाइज़ है बा

वुजूद येह कि अल्लाह तआ़ला ने इन से बिला हि़साब जन्नत का वा'दा फ़रमाया है। इसी त़रह़ हर उस शख़्स के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत कर सक्ते हैं जिस का ख़ातिमा ईमान पर हुवा हो।

क़ुरआने पाक में इर्शाद होता है :

وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ع ⑩

तर-ज़मए कन्जुल ईमान : और वोह जो उन के बा'द आए अ़र्ज़ करते हैं, ऐ हमारे रब ! हमें बख़्श दे और हमारे भाइयों को जो हम से पहले ईमान लाए और हमारे दिल में ईमान वालों की त़रफ़ से कीना न रख, ऐ हमारे रब ! बेशक तू ही निहयत महरबान रह़्म वाला है।

(पारह : 28, अल ह़श्र : 10)

इस आयत के तह़्त ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान में है : जिस के दिल में किसी सह़ाबी की त़रफ़ से बुग़्ज़ या कदूरत हो और वोह उन के लिये दुआ़ए रह़मत व इस्तिग़्फ़ार न करे वोह मुअमिनीन की अक़्साम से ख़ारिज है।

(ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, पारह : 28, अल ह़श्र : 10, पाक कम्पनी लाहोर)

मु-तअ़द्दद अह़ादीसे मुबा-रका में है कि सरकारे आ़ली वक़ार, शफ़ीए रोज़े शुमार, हम बे कसों के मददगार, صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने लोगों को सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم اَجْمَعِيْن के इन्तिक़ाल के बा'द उन के लिये इस्तिग़्फ़ार करने का हुक्म फ़रमाया।

चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि जिस दिन शाहे हब्शा हज़रते सय्यिदुना नजाशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ[1] का इन्तिक़ाल हुवा, शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم اَجْمَعِیْن ने सहाबए किराम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इन के इन्तिक़ाल की ख़बर दी और फ़रमाया : ''اِسْتَغْفِرُوا لِاَ خِیْکُمْ'' या'नी अपने भाई के लिये इस्तिग़फ़ार करो। (सु-ननो नसाई, स. 344, ह़दीस : 2039, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत)

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के गुलाम हज़रते सय्यिदुना हानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अक्रम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब मय्यित को दफ़्न करने से फ़ारिग़ हुए तो उस पर खड़े हो कर फ़रमाया : ''अपने भाई के लिये इस्तिग़फ़ार करो और इस के लिये (क़ब्र के सुवाल जवाब में) साबित क़दमी का सुवाल करो कि अब इन से (क़ब्र में) सुवाल किया जाएगा।'' इमाम अबू दावूद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि वोह बह़ीर बिन रैसान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ थे।

---

1. नजाशी ह़ब्शा के हर बादशाह का लक़ब है अलबत्ता ह़दीसे पाक में मज़्कूर शाहे ह़ब्शा का अस्ल नाम अस्ह़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ है जो कि मु-तअ़द्दद अह़ादीसे मुबा-रका में भी मरवी है, अ़-रबी में इस का मा'नी ''अ़तिय्या'' है। (शर्ह़ सह़ीह़ मुस्लिम लिन्-ववी, जि. 4, स. 22, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या बैरूत)

(सु-ननो अबी दावूद, जि. 3, स. 289, ह़दीस : 3221, दारो एह़याइत्तुरासिल अ़-रबी बैरूत)

तमाम सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان जन्नती हैं

याद रहे कि तमाम सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان आ'ला व अदना (और इन में अदना कोई नहीं) सब जन्नती हैं, वोह जहननम की भिनक (या'नी हल्की सी आवाज़ भी) न सुनेंगे और हमेशा अपनी मन मानती मुरादों में रहेंगे, मह़शर की वोह बड़ी घबराहट उन्हें ग़मगीन न करेगी, फ़िरिश्ते उन का इस्तिक़बाल करेंगे कि येह है वोह दिन जिस का तुम से वा'दा था। येह सब मज़्मून क़ुरआने अ़ज़ीम का इर्शाद है।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 1, स. 127, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने मजीद में इर्शाद फ़रमाता है :

لَا يَسْتَوِیْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقٰتَلَ ؕ اُولٰٓئِكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِیْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَقٰتَلُوْا ؕ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ

तर-जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम में बराबर नहीं वोह जिन्हों ने फ़त्ह़े मक्का से क़ब्ल ख़र्च और जिहाद किया वोह मर्तबा में उन से बड़े हैं जिन्हों ने बा'दे फ़त्ह़ ख़र्च और जिहाद किया और उन सब से **अल्लाह** जन्नत का वा'दा फ़रमा चुका। (पारह : 27, अल ह़दीद : 10)

एक और मक़ाम पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

لَا يَسْتَوِي الْقٰعِدُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ غَيْرُ اُولِي الضَّرَرِ وَالْمُجٰهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ دَرَجَةً ؕ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ وَفَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۹۵﴾

तर-जमए कन्जुल ईमान : बराबर नहीं वोह मुसल्मान कि बे उ़ज़्र जिहाद से बैठ रहें और वोह कि राहे ख़ुदा में अपने मालों और जानों से जिहाद करते हैं, **अल्लाह** ने अपने मालों और जानों के साथ जिहाद करने वालों का द-रजा बैठने वालों से बड़ा किया और **अल्लाह** ने सब से भलाई का वा'दा फ़रमाया और **अल्लाह** ने जिहाद वालों को बैठने वालों पर बड़े सवाब की फ़ज़ीलत दी है।

(पारह : 5, अन्निसाअ : 95)

इन आयाते मुबा-रका के तहूत जम्हूर मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि **अल्लाह** तआ़ला का येह वा'दए जन्नत सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم اَجْمَعِيْن के दोनों गुरौहों से है या'नी फ़त्हे मक्का से क़ब्ल ईमान लाने वाले और फ़त्हे मक्का के **बा'द ईमान** लाने वाले और **जिहाद** में शिर्कत करने वाले और बैठने वाले, और ''اَلْحُسْنٰى'' से मुराद जन्नत है अलबत्ता इन के मर्तबा व मक़ाम के ए'तिबार से जन्नत के द-रजात मुख़्तलिफ़ होंगे जैसा कि इन मज़्कूरा आयात के तहूत तफ़्सीरे इब्ने अ़ब्बास, तफ़्सीरे जलालैन,

तफ़्सीरे कबीर, तफ़्सीरे बैज़ावी, तफ़्सीरे ख़ाज़िन, तफ़्सीरे रूहुल मआ़नी वग़ैरहा में मज़्कूर है।

छोटे बच्चे का तीजा करना कैसा ?

सुवाल : छोटा बच्चा फ़ौत हो जाए तो क्या उस का तीजा वग़ैरा कर सकते हैं ?

जवाब : कर सकते हैं। छोटे बच्चे को भी अगर ईसाले सवाब करें तो उस को सवाब पहुंचता है। तीजा, दसवां, चालीसवां येह सब ईसाले सवाब के जराएअ़ हैं,[1] इन का करना कारे सवाब है, न करें तो गुनाह नहीं।

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से छोटे बच्चे को ईसाले सवाब करने के बारे में सुवाल किया गया तो इर्शाद फ़रमाया : ''ज़रूर जाइज़ है और बेशक सवाब पहुंचता है, अहले सुन्नत का येही मज़्हब है।'' मज़ीद फ़रमाते हैं : ''इस में कोई शक नहीं कि बच्चा अहले सवाब में से है। (क्यूं कि) ह़दीस शरीफ़ की तस्रीह़ात, उ़-लमाए किराम के इर्शादात मुत्लक़ मज़्कूर

---

1. सोयम, चहलम की मजालिस में नीज़ ग्यारहवीं शरीफ़ की नियाज़ की दा'वत वग़ैरा के मवाक़ेअ़ पर ईसाले सवाब के लिये ''लंगरे रसाइल'' के म-दनी बस्ते लगवाइये। ईसाले सवाब के लिये अपने मर्ह़ूम अ़ज़ीज़ों के नाम डलवा कर फ़ैज़ाने सुन्नत, नमाज़ के अह़काम और दीगर छोटी बड़ी किताबें, रिसाले और पेम्फ़लेट वग़ैरा की तक़्सीम के ख़्वाहिश मन्द इस्लामी भाई मक-त-बतुल मदीना से रुजूअ़ करें।)

हैं कि जिन में कोई तख़्सीस नहीं (या'नी बालिग़ व ना बालिग़ की कोई क़ैद मज़्कूर नहीं) ।''

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 23, स. 124, मर्कज़ुल औलिया लाहोर)

ईसाले सवाब का त़रीक़ा और इस के बारे में दिल चस्प मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना का मत़्बूआ़ मुख़्तसर रिसाला ''**फ़ातिह़ा का त़रीक़ा**'' मुला-ह़ज़ा फ़रमा लीजिये ।

ह़ज व उ़म्रह के लिये सुवाल करना कैसा ?

सुवाल : क्या ह़ज व उ़म्रे के लिये सुवाल कर सकते हैं ?

जवाब : हरगिज़ नहीं कर सकते । ह़ज व उ़म्रह करने वाले के पास अपने सफ़र व त़आ़म के तमाम अख़्राजात होने चाहिएं ।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِىْ अपनी तफ़्सीर ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान में पारह **2** सू-रतुल ब-क़रह की आयत 197 : (وَتَزَوَّدُوْا فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى) **तर-जमए कन्ज़ुल ईमान :** और तोशा साथ लो कि सब से बेहतर तोशा परहेज़ गारी है (पारह : 2, अल ब-क़रह : 197)) के तह़्त फ़रमाते हैं : ''बा'ज़ य-मनी ह़ज के लिये बे सामानी के साथ रवाना होते थे और अपने आप को मु-तवक्किल कहते थे और मक्कए मुकर्रमा में पहुंच कर सुवाल शुरूअ़ कर देते और कभी ग़सब व ख़ियानत के मुर्तकिब होते । उन के बारे में आयते मुक़द्दसा नाज़िल हुई और हुक्म हुवा कि तोशा ले कर चलो, औरों पर बार

न डालो, सुवाल न करो कि बेहतर तोशा परहेज़ गारी है।" (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 2, अल ब-क़रह : 197, पाक कम्पनी लाहोर)

ह़ज व उ़म्रह के लिये सुवाल करना दर किनार फ़ु-क़्हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने यहां तक लिखा है कि ग़ुस्ल के बा'द एह़राम बांधने से पहले अपने बदन पर ख़ुश्बू लगाइये ब शर्ते कि अपने पास मौजूद हो, अगर अपने पास न हो तो किसी से ख़ुश्बू का सुवाल मत कीजिये।

(अद्दुर्रुल मुख़्तार व रद्दुल मुह़्तार, जि. 3, स. 559, दारुल मा'रिफ़ह बैरूत)

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का जज़्बए अ़मल

जब सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सुवाल करने की मुमा-न-अ़त फ़रमाई तो बा'ज़ सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم اَجْمَعِیْن का ह़ाल तो येह हो गया कि अगर वोह सुवारी पर होते और उन का चाबुक गिर जाता तब भी किसी से न कहते कि उठा दो, ख़ुद ही नीचे उतर कर उठा लेते। चुनान्चे सय्यिदुना औ़फ़ बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि जब शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे ह़ुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बी बी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से फ़रमाया : تَسْأَلُوا النَّاسَ شَيْئًا (या'नी लोगों से किसी शै का सुवाल न करो) तो रावी फ़रमाते हैं कि बा'ज़ सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم اَجْمَعِیْن

ऐसे भी थे कि अगर उन का चाबुक गिर जाता तो किसी से न कहते कि येह चाबुक इन्हें उठा कर दें। (सु-ननो अबी दावूद, जि. 2, स. 169, ह़दीस : 1642, दारो एह़याइत्तुरासिल अ़-रबी बैरूत)

जन्नत की ज़मानत

ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अक्रम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स मुझे इस बात की ज़मानत दे कि लोगों से कोई चीज़ न मांगे, तो मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अ़र्ज़ गुज़ार हुए कि मैं इस बात की ज़मानत देता हूं। चुनान्चे वोह किसी से कुछ नहीं मांगा करते थे। (मुस्नदो इमाम अह़मद बिन ह़म्बल, जि. 8, स. 322, ह़दीस : 22437, दारुल फ़िक्र बैरूत)

ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बारे में एक और ह़दीसे पाक में है कि जब मह़बूबे रब्बे जुल जलाल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सुवाल करने से मुमा-न-अ़त फ़रमाई तो ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ सुवारी पर सुवार होते और चाबुक नीचे गिर जाता तो किसी से न फ़रमाते कि मुझे उठा कर दो बल्कि ख़ुद नीचे तशरीफ़ लाते और उठा लेते।

(सु-ननो इब्ने माजह, जि. 2, स. 400, ह़दीस : 1837, दारुल मा'रिफ़ह बैरूत)

"یَا عَفُوُّ" के 5 हुरूफ़ की निस्बत से सुवाल करने पर 5 वईदें

सुवाल : सुवाल करने के बारे में चन्द एक वईदें इर्शाद फ़रमा दीजिये ।

जवाब : बिला ज़रूरते शरइय्या सुवाल करने की मुमा-न-अ़त पर कसीर अहादीस वारिद हैं जिन में से पांच अ़र्ज़ की जाती हैं :

मदीना 1 : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''जो माल बढ़ाने के लिये लोगों से उन के अम्वाल का सुवाल करता है, वोह अंगारे का सुवाल करता है तो चाहे ज़ियादा मांगे या कम का सुवाल करे ।'' (सह़ीह़ मुस्लिम, स. 518, ह़दीस : 1041, दारो इब्ने ह़ज़्म, बैरूत)

मदीना 2 : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अक्रम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''जो शख़्स सुवाल करे ह़ालां कि उस के पास इतना हो जो इसे बे नियाज़ कर दे तो बरोज़े क़ियामत इस ह़ाल में आएगा कि सुवाल करने की वजह से उस के चेहरे पर ख़राशें पड़ी होंगी ।''

(सु-ननो तिरमिज़ी, जि. 2, स. 138, ह़दीस : 650, दारुल फ़िक्र बैरूत)

मदीना 3 : नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर,

सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''जिस शख़्स ने बिग़ैर फ़ाक़े के सुवाल किया तो बिला शुबा वोह अंगारा खाता है ।'' (मुस्नदो इमाम अहमद बिन हम्बल, जि. 6, स. 162, हदीस : 17516, दारुल फ़िक्र बैरूत)

मदीना 4 : सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : ''जो शख़्स लोगों से सुवाल करे हालां कि न इसे फ़ाक़ा पहुंचा, न इतने बाल बच्चे हैं जिन की ताक़त नहीं रखता तो क़ियामत के दिन इस तरह आएगा कि उस के मुंह पर गोश्त न होगा ।'' (शु-अबुल ईमान, जि. 3, स. 274, हदीस : 3526, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या बैरूत)

मदीना 5 : हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : ''जो शख़्स सुवाल करे और इस के पास इतना है कि उसे बे परवाह करे, वोह आग की ज़ियादती चाहता है ।'' अर्ज़ की गई, या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह क्या मिक़्दार है जिस के होते हुए सुवाल जाइज़ नहीं ? फ़रमाया, ''दिन और रात या रात और दिन का खाना ।''

(अस्सु-ननुल कुब्रा लिल बैहक़ी, जि. 7, स. 39, हदीस : 13212, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या बैरूत)

मीरक्तीन की ता'रीफ़

सुवाल : मिस्कीन की ता'रीफ़ भी बता दीजिये।

जवाब : जिस के पास एक दिन के खाने और पहनने का न हो वोह मिस्कीन है। अगर कपड़े हैं, खाना नहीं तो खाने के लिये सुवाल कर सकता है। खाना है और कपड़े नहीं तो अब कपड़े मांग सकता है।

फ़तावा आ़लमगीरी में है : "मिस्कीन वोह है जिस के पास कुछ न हो ह़त्ता कि खाने और बदन छुपाने के लिये भी सुवाल करने का मोह़ताज हो पस उस के लिये सुवाल करना ह़लाल जब कि फ़क़ीर के लिये सुवाल करना ह़लाल नहीं क्यूं कि बदन को ढांपने के बा'द जो एक दिन के खाने का मालिक हो उस के लिये सुवाल करना ह़लाल नहीं।"

(अल फ़तावल हिन्दिय्या, जि. 1, स. 187,188, कोएटा)

पेशावर भिकारियों के बारे में हुक्म

सुवाल : बा'ज़ लोग जो बत़ौरे पेशा भीक मांगते हैं इन वईदों की रू से वोह तो सख़्त मुजरिम हुए ?

जवाब : जी हां ! मेरे आक़ा, आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से पेशावर गदा गरों (भिकारियों) के बारे में सुवाल किया गया तो इर्शाद फ़रमाया : "जो अपनी ज़रूरियाते

शरइय्या के लाइक़ माल रखा है या इस के कस्ब पर क़ादिर है उसे सुवाल और जे उस माल से आगाह हो उसे देना ह़राम, और लेने और देने वाला दोनों गुनहगार व मुब्तलाए आसाम (या'नी गुनाहों में मुब्तला हुए) ।''

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा जि. 10, स. 307, मर्कज़ुल औलिया लाहोर)

फ़तावा आ़लमगीरी में है : ''जिस के पास उस दिन के खाने के लिये मौजूद हो उस के लिये सुवाल करना ह़लाल नहीं । साइल ने इस त़रीक़े पर जो जम्अ़ किया वोह ख़बीस माल है ।''

(अल फ़तावल हिन्दिय्यह, जि. 5, स. 349, कोएटा)

गदा गरी की मौजूदा सूरते ह़ाल

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : ''आजकल एक आ़म बला येह फैली हुई है कि अच्छे ख़ासे तन्दुरुस्त चाहें तो कमा कर औरों को खिलाएं, मगर उन्हों ने अपने वुजूद को बेकार क़रार दे रखा है, कौन मेह़नत करे, मुसीबत झेले, बे मशक़्क़त जो मिल जाए तो तक्लीफ़ क्यूं बरदाश्त करे । ना जाइज़ त़ौर पर सुवाल करते और भीक मांग कर पेट भरते हैं और बोहतेरे ऐसे हैं कि मज़दूरी तो मज़दूरी, छोटी मोटी तिजारत को नंग व आ़र (शर्म व ज़िल्लत का काम) ख़याल करते और भीक

मांगना कि हक़ीक़तन ऐसों के लिये बे इज़्ज़ती व बे ग़ैरती है, मायए इज़्ज़त जानते हैं और बहुतों ने तो भीक मांगना अपना पेशा ही बना रखा है, घर में हज़ारों रुपै हैं, सूद का लैन दैन करते, ज़राअ़त वग़ैरा करते हैं मगर भीक मांगना नहीं छोड़ते, उन से कहा जाता है तो जवाब देते हैं कि येह हमारा पेशा है वाह साहिब वाह ! क्या हम अपना पेशा छोड़ दें ! हालां कि ऐसों को सुवाल ह़राम है और जिसे उन की ह़ालत मा'लूम हो, उसे जाइज़ नहीं कि उन को दे ।'' (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 5, स. 75,76, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची)

ना समझ बच्चे के ज़बीहे का हुक्म

सुवाल : ना समझ बच्चे का ज़बीहा ह़लाल है या ह़राम ?

जवाब : ना समझ बच्चे का ज़बीहा ह़राम है । मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ''जिन्न, मुरतद, मुश्रिक, मजूसी, मजनून (या'नी पागल), ना समझ और उस शख़्स का जो क़स्दन तक्बीर तर्क कर दे ज़ब्ह़ शुदा जानवर ह़राम व मुरदार है, और इन के इ़लावा का ह़लाल है जब कि रगें ठीक कट जाएं, अगर्चे ज़ब्ह़ करने वाली औ़रत हो या समझ वाला बच्चा या गूंगा या बे ख़त्ना हो, और अगर ज़ब्ह़ होने वाला शिकार

हो तो येह भी शर्त़ है कि ज़बीह़ा ह़रम में न हो ज़ाबेह़ (या'नी ज़ब्ह़ करने वाला) एह़राम की ह़ालत में न हो।"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 20, स. 242, मर्कज़ुल औलिया लाहोर)

एह़राम की ह़ालत में मुर्ग़ी ज़ब्ह़ करना

सुवाल : एह़राम की ह़ालत में मुर्ग़ी ज़ब्ह़ कर सकता है या नहीं ?

जवाब : कर सकता है। सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی इस उ़न्वान : "येह बातें एह़राम में जाइज़ हैं" के तह़्त लिखते हैं : "पालतू जानवर ऊंट, गाय, बकरी, मुर्ग़ी वग़ैरा ज़ब्ह़ करना।"

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 6, स. 52, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची)

होटल से बिग़ैर इजाज़त पानी पीना या हाथ धोना कैसा ?

सुवाल : क्या होटल से बिग़ैर पूछे पानी पी सकते हैं या वहां का खाना न खाने के बा वुजूद हाथ धो सकते हैं ?

जवाब : मालिक की इजाज़त के बिग़ैर इस्ति'माल नहीं कर सकते। सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "बालिग़ का भरा हुवा (पानी जो उस की मिल्क हो) बिग़ैर इजाज़त सर्फ़ (इस्ति'माल) करना ह़राम है।"

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 2, स. 57, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची)

हां अगर इजाज़त हो तो ह़रज नहीं, इजाज़त की दो सूरतें हो सकती हैं :

मदीना 1 : इजाज़त सराह़तन हो जैसे मालिक ने ज़बान से कह दिया कि गाहक ग़ैर गाहक ''हर एक को पीने और इस्ति'माल करने की इजाज़त है'' या येही किसी टंकी या वॉटर कूलर पर लिखवा दिया या कोई और ज़रीआ़ जिस से मालिक की त़रफ़ से इजाज़त मा'लूम हो जाए।

मदीना 2 : इजाज़त दला-लतन हो जैसा कि वहां उ़र्फ़ व आ़दत हो कि मुसाफ़िरों या राहगीरों को पानी पीने से मन्अ़ नहीं किया जाता। जैसा के मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن सबील के पानी के बारे में फ़रमाते हैं : ''मालिके आब (या'नी पानी के मालिक) की इजाज़त मुत्लक़न या उस शख़्से ख़ास के सराह़तन ख़्वाह दला-लतन साबित हो। सराह़तन येह कि उस ने येही कह कर सबील लगाई हो कि जो चाहे पिये, वुज़ू करे, नहाए और अगर फ़क़त पीने और वुज़ू के लिये कहा तो उस से ग़ुस्ल रवा (या'नी जाइज़) न होगा और ख़ास उस शख़्स के लिये यूं कि

सबील तो पीने ही को लगाई मगर उसे उस से वुज़ू या ग़ुस्ल की इजाज़त ख़ुद या इस के सुवाल पर दी और दला-लतन यूं कि लोग उस से वुज़ू करते हैं और वोह मन्अ़ नहीं करता या सक़ाया क़दीम है और हमेशा यूं ही होता चला आया है या पानी इस क़-रजा कसीर है जिस से ज़ाहिर है कि सिर्फ़ पीने को नहीं मगर जब कि साबित हो कि अगर्चे कसीर है सिर्फ़ पीने ही की इजाज़त दी है فَاِنَّ الصَّرِیحَ یَفُوقُ الدَّلَالَۃَ (या'नी सराहत को दलालत पर फ़ौक़िय्यत हासिल है) और शख़्से ख़ास के लिये यूं कि इस में और मालिके आब में कमाले इम्बिसात़ व इत्तिहाद है येह उस के ऐसे माल में जैसा चाहे तसर्रुफ़ करे, उसे ना गवार नहीं होता।'' (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 2, स. 481, मर्कज़ुल औलिया लाहोर)

इसी की मिस्ल चन्द मसाइले फ़िक़्हिय्यह ज़िक्र करने के बा'द जिल्द 2 सफ़ह़ा 489 पर फ़रमाते हैं : ''ख़ुलासा येह है कि अस्ल दारो मदार उ़र्फ़ पर है।''

बहर ह़ाल इजाज़त की जो सूरत भी हो उस के मुत़ाबिक़ ही पानी इस्ति'माल कर सकते हैं या'नी जिस काम के लिये, जितने इस्ति'माल की इजाज़त हो, उसी क़दर उसी काम में सर्फ़ किया जा सकता है जैसे पानी पीने के लिये है तो कपड़ा वग़ैरा नहीं धो

सकते या किसी बड़े बरतन या वॉटर कूलर वग़ैरा में भर कर दूसरी जगह नहीं ले जा सकते। इसी त़रह़ इस्ति'माल उ़र्फ़ व आ़दत से हट कर हो तो भी मालिक से इजाज़त लिये बिग़ैर इस्ति'माल नहीं कर सकते। फिर येह इजाज़त होटल के मालिक से या उस के क़ाइम मक़ाम से ली जाए। सिर्फ़ "बेरे" या'नी होटल के मुलाज़िम की इजाज़त भी काफ़ी नहीं।

मालिक की इजाज़त के बिग़ैर पत्थर उठाने का हुक्म

सुवाल : क्या हम अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की अदा को अपनाने के लिये सड़क पर पड़े हुए पत्थरों के ढेर में से गोल पत्थर चुन सक्ते हैं ?[1]

जवाब : इस अदा को अपनाना अगर्चे बड़ी सआ़दत की बात है कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ग़ैर ज़रूरी गुफ़्तुगू से बचने के लिये अपने मुंह मुबारक में पत्थर लिये रहते थे।

(कीमियाए सआ़दत, जि. 2, स. 563, इन्तिशाराते गन्जीना तहरान)

---

1. ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की इस अदा को अपनाने के लिये اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मक्-त-बतुल मदीना पर क़ुम्ले मदीना के पत्थर दस्त याब हैं, जो हदिय्यतन त़लब किया जा सक्ते हैं।)

सड़क पर पड़े हुए पत्थर उठाने की मुख़्तलिफ़ सूरते हैं : म-सलन **(1)** अगर किसी जगह इस्ति'माल में आने वाले क़ीमती पत्थरों का ढेर हो वहां से उठाना मन्अ़ है कि ता'मीर में इस्ति'माल होने वाले पत्थर किसी जगह जम्अ़ शुदा रखे हों उन में से लेना किसी की मिल्किय्यत में ना जाइज़ तसर्रुफ़ है। **(2)** अगर पत्थर क़ीमती न हों या'नी ऐसे न हों जो बिकते हों, आ़म रास्ते पर पड़े हों उन को उठाने में ह़रज नहीं कि वोह किसी की मिल्किय्यत में नहीं। **(3)** यूंही ता'मीराती कम क़ीमत पत्थरों में से कोई एक आध पत्थर आ़म रास्ते पर पड़ा हुवा नज़र आए तो उसे उठाने में भी ह़रज नहीं कि मा'मूली बे क़ीमत सी चीज़ है, मालिक की त़रफ़ से ऐसी मा'मूली सी बे क़ीमत चीज़ें अगर कहीं पड़ी हों तो दला-लतन इबाह़त होती है जो चाहे इस्ति'माल कर ले। जैसा कि अ़ल्लामा इब्ने नुजैम मिस्री رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : "कोई ऐसी चीज़ पाई जो बे क़ीमत है जैसे खजूर की गुठली, अनार का छिल्का ऐसी अश्या में ए'लान की ह़ाजत नहीं क्यूं कि मा'लूम होता है इसे छोड़ देना इबाह़त (या'नी दूसरों के लिये जाइज़ कर

देना) है कि जो चाहे ले ले और अपने काम में लाए और येह छोड़ना तम्लीक (मालिक बनाना) नहीं कि मज्हूल (ना मा'लूम) की त़रफ़ से तम्लीक (मालिक बनाना) सह़ीह़ नहीं लिहाज़ा वोह अब भी मालिक की मिल्क में बाक़ी है और (बा'ज़ फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام येह फ़रमाते हैं कि) येह हुक्म उस वक़्त है कि वोह मु-तफ़र्रक़ (मुन्तशिर) हों और अगर इकठ्ठी हों तो मा'लूम होता है कि मालिक ने काम के लिये जम्अ़ कर रखी हैं लिहाज़ा मह़फ़ूज़ रखे।" (अल बह़रुर्राइक़, जि. 5, स. 256, मुल-त-क़त़न, कोएटा)

सुवाल : पुरानी क़ब्ज़ दूर करने के लिये चन्द आसान नुस्ख़े इर्शाद फ़रमा दीजिये।

जवाब : मदीना 1 : रोज़ाना पांच अ़दद इन्जीर खा लिया करें।

मदीना 2 : चार, पांच अ़दद बीज समेत पक्के अम्रूद खा लीजिये।

मदीना 3 : मुनासिब मिक़्दार में पपीता खा लीजिये اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ पेट साफ़ हो जाएगा।

मदीना 4 : हर चौथे दिन तीन चार चम्मच इस्पग़ोल की भूसी या एक चम्मच कोई सा भी हाज़िम चूरन पानी के साथ निगल लीजिये।

इस्पग़ोल या हाज़िम चूरन के रोज़ाना इस्ति'माल से अक्सर येह बे असर हो जाता है।

मदीना 5 : अगर आप का डॉक्टर इजाज़त दे तो हर दो या तीन माह बा'द पांच दिन तक सुब्ह़ो शाह एक एक टिक्या ग्रामेक्स 400 मिली ग्राम **GRAMEX Metronidazole** इस्ति'माल कीजिये। क़ब्ज़, बद हज़्मी वग़ैरा अम्राज़ और पेट की इस्लाह़ के लिये اِنْ شَاءَ الله عَزَّوَجَلَّ एक बेहतरीन दवा साबित होगी लेकिन जब भी इस टिक्या का इस्ति'माल शुरूअ़ करें तो मुसल्सल पांच दिन पूरे करना ज़रूरी है। ख़ाली पेट में भी ले सकते हैं।

''अह़मद रज़ा'' के 7 हुरूफ़ की निस्बत से इन्तिक़ाल के बा'द मोमिन के काम आने वाली 7 चीज़ें

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मोमिन के इन्तिक़ाल के बा'द उस के अ़मल और नेकियों में से जो चीज़ें उसे मिलती हैं वोह येह हैं : (1) इ़ल्म जिसे उस ने सिखवाया और फैलाया (2) नेक औलाद जिसे छोड़ कर मरा (3) क़ुरआने पाक जिसे विरसे में छोड़ा (4) वोह मस्जिद जिसे इस ने बनाया (5) मुसाफ़िर ख़ाना जो उस ने मुसाफ़िरों के लिये बनवाया (6) किसी नहर को जारी किया (7) सदक़ए जारिय्या जिसे उस ने ह़यातेसिह़्ह़त और ज़िन्दगी में अपने माल से दिया।"

(सु-ननो इब्ने माजह, जि. 1, स. 157, ह़दीस : 242, दारुल मा'रिफ़ह बैरुत)

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के महके महके म-दनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं हर जुमा'रात को शाहे आ़लम दरवाज़ा के पास म-दनी मर्कज़ शाही मस्जिद में इ़शा की नमाज़ के बा'द होने वाले सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ म-दनी इन्आ़मात का कार्ड पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा हर इस्लामी भाई अपना येह म-दनी ज़ेह्न बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़हा
पहले इसे पढ़ लीजिये !	2
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	4
आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से अ़क़ीदत	4
दरख़्त के नीचे कलिमा शरीफ़ पढने में ह़िक्मत	6
बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने की फ़ज़ीलत	6
अज़ान की आवाज़ की गवाही	7
हर चीज़ तस्बीह़ करती है	7
ज़मीन के ह़िस्सों की आपस में गुफ़्तुगू	8
डब्बो स्नोकर का आ़दी सौम व सलात का पाबन्द बन गया	10
परेशानी दूर करने के अवराद व वज़ाइफ़	12
तमाम मुसल्मानों को दुआ़ में शरीक करने की फ़ज़ीलत	14
''या नबी'' के 5 ह़ुरूफ़ की निस्बत से 5 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	15
मुसाफ़िर की दुआ़ क़बूल होती है	16
नई ज़िन्दगी मिल गई	17
पीरो मुर्शिद के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत कर सकते हैं	18

उ़न्वान	सफ़हा
तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان जन्नती हैं	20
छोटे बच्चे का तीजा करना कैसा ?	22
ह़ज व उ़म्रह के लिये सुवाल करना कैसा ?	23
सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का जज़्बए अ़मल	24
जन्नत की ज़मानत	25
''یَا عَفُوُّ'' के पांच ह़ुरूफ़ की निस्बत से सुवाल करने पर पांच वई़दें	26
मीस्कीन की ता'रीफ़	28
पेशावर भिकारियों के बारे में हुक्म	29
गदा गरी की मौजूदा सूरते ह़ाल	29
ना समझ बच्चे के ज़बीह़े का हुक्म	30
एह़राम की ह़ालत में मुर्ग़ी ज़ब्ह़ करना	31
होटल से बिग़ैर इजाज़त पानी पीना या हाथ धोना कैसा ?	31
मालिक की इजाज़त के बिग़ैर पत्थर उठाने का हुक्म	34
क़ब्ज़ दूर करने के चन्द आसान नुस्ख़े	36
''अह़मद रज़ा'' के 7 ह़ुरूफ़ की निस्बत से इन्तिक़ाल के बा'द मोमिन के काम आने वाली 7 चीज़ें	38